शक्तिदान कविया

कवि–परिचै–

राजस्थानी भाषा, साहित अर सस्कृति रा बहुभाषाविद् विद्वान अर डिंगल रा ख्यातनाम कवि डॉ. शक्तिदान कविया रो जलम जोधपुर जिलै री शेरगढ़ तहसील रै बिराई गांव में 17 जुलाई 1940 मांय होयौ। डॉ. कविया, जयनारायण व्यास विश्वविद्यालय में हिन्दी अर राजस्थानी विसयां में अध्यापन करायो। राजस्थानी विभाग में आप अध्यक्ष रै रूप में कार्य कर्‌यो। डॉ. शक्तिदान कविया री लिखी रचनावां मांय 'संस्कृति री सौरम', 'सपूतां री धरती', 'लाखीणी', 'सोढायण', 'रंगभीनी', 'काव्य–कुसुम', 'कविमत मंडण', 'फूल सारू पांखड़ी', 'दरजी मयाराम री वात', 'राजिया रा सोरठा', 'ऊमरदान ग्रंथावली', 'डिंगल का ऐतिहासिक प्रबंधकाव्य' अर 'राजस्थानी दूहा संग्रह' रो सम्पादन, 'अेलीजी' रो अनुवाद अर 'धरती घणी रूपाळी' रो अनुवाद राजस्थानी साहित भंडार रा अमोल रतन है। राजस्थान साहित अकादमी, राजस्थान रतनाकर, सूरजमल मीसण शिखर पुरस्कार, महाराणा कुंभा पुरस्कार, साहित अकादेमी रो अनुवाद पुरस्कार, फूलचंद बांठिया पुरस्कार, घनश्यामदास सर्राफ पुरस्कार, लाखोटिया पुरस्कार, कमला गोइन्का पुरस्कार आद राष्ट्रीय स्तर रा पुरस्कारां अर सनमानां सूं सनमानित डॉ. कविया इटली में भी, पत्र–वाचन कर राजस्थानी सस्कृति, इतिहास अर साहित रै प्रचार–प्रसार री उल्लेखजोग सेवा करी। डिंगल–परम्परा रा आधुनिक सशक्त रचनाकारां में डॉ. शक्तिदान कविया रो नांव सबसूं पैली आवै। बरस 2013 में राजस्थानी भाषा, साहित्य एवं संस्कृति अकादमी, बीकानेर कानी सूं आपनैं सर्वोच्च पृथ्वीराज राठौड़ पुरस्कार दियो जावणो घोषित हुयो।

पाठ–परिचै–

'आ राजस्थानी भाषा है' कविता रै माध्यम सूं राजस्थानी भाषा, साहित, इतिहास अर संस्कृति री गौरव–गुमेजपूरण परम्परा रा हेताळु–कवि भांत–भांत रा उदाहरणां अर दृष्टांतां सूं ईं सांच रो बखाण कर्‌यो है कै राजस्थानी भाषा में अणगिणत गुण है। इण भाषा रै कारण ई अठै री धरती माथै वीरता, भगती अर सिणगार री घटणावां नैं यादगार घटणा बणनै रो सुअवसर मिल्यो। राजस्थानी भाषा री महत्ता रै बखाण री इण कविता में कवि राजस्थान री संस्कृति अर इतिहास नैं जीवन्त राखणवाली राजस्थानी भाषा रा बहुआयामी गुणां रो सरस, असरदार अर चित्रात्मकता रै साथै वरणाव कर्‌यो है।

आ राजस्थानी भाषा है

इणरो इतिहास अनूठौ है, इण मांय मुलक री आसा है।
चहुकूंटां चावी नै ठावी, आ राजस्थानी भाषा है।।

जद ही भारत में सताजोग, आफत री आंधी आई ही।
बगतर री कड़ियां बड़की ही, जद सिन्धू राग सुणाई ही।
गड़गड़िया तोपां रा गोळा, भालां री अणियां भळकी ही।

जोधारां धारां जुड़तां ही, खाळां रातम्बर खळकी ही।
रड़वड़ता माथा रणखेतां, अड़वड़ता घोड़ा ऊलळता।
सिर कटियां सूरा समहर में, ढालां तरवारां ले ढळता।
रणबंका भिड़ आरांण रचै, तिड़ पेखै भांण तमासा है।
उण बखत हुवै ललकार उठै, वा राजस्थानी भाषा है।।

प्रसंगः– अै ओळ्यां 'आ राजस्थानी भाषा है' कविता सूं ली गई है। इणरा कवि डॉ. शक्तिदान कविया है। इण कविता रै माध्यम सूं राजस्थानी भाषा, साहित, इतिहास अर संस्कृति री गौरव–गमेजपूरण परम्परा रा हेताळु–कवि भांत–भांत रा उदाहरणां अर दृष्टांतां सूं ईं सांच रो बखाण कर्‌यो है कै राजस्थानी भाषा में अणगिणत गुण है। इण भाषा रै कारण ई अठै री धरती माथै वीरता, भगती अर सिणगार री घटणावां नैं यादगार घटणां वणनै रो सुअवसर मिल्यो।

व्याख्याः– कवि कैवै कै इण राजस्थानी भाषा रो इतिहास अनूठो है अर इण भाषा में इण मुलक री आसावां है। आ भाषा चहुंकूंटां चावी अर ठावी है। मतलब आ भाषा राजस्थानी अठै रै मिनखां रै मन बसियोड़ी अर घणी लोकप्रिय है।

मायड़ भासा री महता रो बखाण करता कवि कैवै कै किणीं कारणां सूं भारत में जद आफत री आंधी आई ही। इण धरती माथै जुद्ध हुया अर राजस्थानी वीरां रा दुसमणां सूं मुकाबला हुया तो वां जोधावां नैं कवियां इण भाषा रा वीरता रा छंद सिंधु राग में सुणाया। इण भाषा रै छंदां रो असर ओ हुयो कै वीरां रा सीना फूलग्या अर वां रै बख्तर री कड़ियां बड़क गी। तोपां रा गोळा गड़गड़ाट कर उठ्या, भाला ले वीर जुद्धभोम में चाल्या तो भालां री अणियां पळपळाट कर उठी। वां जोधां जद तलवारां री धारावां सूं टक्कर लीनी तो रातै रगत रा खाळा खळकवा लाग्या। रण–भूमि में दुसमणां रा माथा कट–कट लुढकण लाग्या। अेक दूजै नैं पछाड़ता, गिरता–पड़ता, उमड़ता, उलळता घोड़ा आगै बढण लाग्या। इण वेळा सिर कटण रै बावजूद सूरवीर समर में ढालां अर तलवारां ले आगै बढता दीख रैया हा। जुद्ध में बांकां वीर रण रचै, रण रो असल रूप दिखावै तो अैड़ै वगत में सूरज भी तमासा देखण सारू थम जावै। रणभोम में अैड़ै वगत जिण भाषा में ललकार उठै, हुंकार उठै, वा ईज तो राजस्थानी भाषा है।

विसेसः–

(1) डिंगल शैली में राजस्थानी भाषा री वीर–परम्परा रो सांतरो बखाण हुयो है।

(2) 'चहूंकूंटां चावी', 'सिर कटियां सूरा समहर' में अनुप्रास, 'जोधारां धारां' में यमक, 'सिर कटियां सूरा समहर में ढालां तरवारां ले ढळता' में अतिशयोक्ति अलंकार है।

(3) भाषा अेकदम टकसाली राजस्थानी है।

(4) अै ओळ्यां बांच्यां सूर्यमल्ल मीसण री वीर सतसई रो दूहो चेतै आवै–

बिण माथै बाढै दळां, पोढै करज उतार।
तिण सूरां रो नांव ले, भड़ बांधै तरवार।।

(5) रामस्वरूप किसान रो दूहो भी चेतै आवै–

राजस्थानी कम नहीं, आ वीरां री भास।
इण भाषा रै कारणै, लड़ी मोरचां लास।।

———————————————————

इणमें वीरां री गुणगाथा, इणमें संतां री बाणी है।
इणमें पाबू रा परवाड़ा, इणमें रजवट रो पांणी है।
इणमें जांभै री जुगत जोय, पीपै री दया प्रकासी है।
दीठौ समदरसी रामदेव, दादू सत नांम उपासी है।
इणमें तेजै रा वचन तौर, इणमें हमीर रो हठ पेखौ।
आवड़ करनी मालणदे रा, इणमें परचा परगट देखौ।
जद तांई संत सूरमा अर, साहितकारां री सांसां है।
करसां रै हिवड़ै री किलोळ, आ राजस्थानी भाषा है।।

प्रसंगः– 'आ राजस्थानी भाषा है' कविता री आं ओळ्यां में कवि शक्तिदान कविया राजस्थानी भाषा री महिमा रो बखाण करै। कवि बतावै कै आ भाषा सूरां अर संतां री है अर इण भाषा में आं रो सांगोपांग बखाण हुयो है। इण धरती रै संत अर भगत कवियां जनता नैं उपदेस देवण सारू जिकी बाणियां रची बै सगळी इण भाषा में ई है।

व्याख्याः– कवि बतावै कै इण राजस्थानी भाषा में वीरां री गुणगाथावां अर संतां री बांणी मोकळी है। इणी भाषा में पाबू जी रा परवाड़ा है। परवाड़ां नैं आजकाल लोकगाथा कैवै। तो पाबूजी समेत सगळा वीरां री लोकगाथावां इण भाषा में सिरज्योड़ी है। अठै री वीरता री मान–मरजादा भी इणी भाषा में प्रगट हुयी है। जांभै जी सहज जीवण री जिकी जुगत अर तरकीबां आमजन नैं बताई, भगत पीपै री दया भावना जिण भाषा में प्रकासित हुयी, लोकदेव रामदेवजी री समदरसी भावना जिण भाषा में दीखी, संत दादूदयाल जिण भाषा में सत्य अर नाम री उपासना कीधी, तेजै जी रै वचनां रा तेवर अर हमीर रो हठ जिण भाषा में जनता रै साम्हीं आयो, आवड़, करणी अर मालणदे जिसी लोकदेवियां जिण भाषा में परचा दीधा, वा भाषा राजस्थानी है अर जद तांई संत, सूरवीरां अर साहित्यकारां री सांसां चालती रैवैला, तद तांई किरसाणां रै हिवड़ै में उमंग पैदा करणवाळी आ भाषा राजस्थानी जीवती रैवैला।

विसेसः–

(1) डिंगल शैली में राजस्थानी भाषा री लोक–परम्परा रो सांतरो बखाण हुयो है।

(2) भाषा अेकदम टकसाली राजस्थानी है।

(3) 'संत सूरमा अर साहितकारां री सांसां' में अनुप्रास अलंकार री छटा देखणजोग है।

(4) अै ओळ्यां बांच्यां हनुवंतसिंह देवड़ा रो ओ दूहो चेतै आवै–

जस–आखर लिखै न जठै, वा धरती मर जाय।
संत–सती अर सूरमां, अै ओझळ व्है जाय।।

———————————————————

करमां री इण बोली में ही, भगवान खीचड़ौ खायौ है।
मीरां मेड़तणी इण में ही, गिरधर गोपाळ रिझायौ है।
इणमें ही पिव सूं माण हेत, राणी ऊमांदे रूठी ही।

पदमणियां इणमें पाठ पढ्यौ, जद जौहर ज्वाळा ऊठी ही।
इणमें हाडी ललकार करी, जद आंतड़ियां परनाळी ही।
मुरधर री बागडोर इणमें ही, दुरगादास संभाळी ही।
इणमें प्रताप रौ प्रण गूंज्यौ, जद भेंट करी भामासा है।
सतवादी घणा सपूतां री, आ राजस्थानी भाषा है।।

प्रसंगः– 'आ राजस्थानी भाषा है' कविता री आं ओळ्यां में कवि शक्तिदान कविया राजस्थानी भाषा री महिमा रो बखाण करै। कवि बतावै कै आ भाषा सूरां–संतां, भगतां अर घणै सपूतां री है अर इण भासा में आं रो सांगोपांग बखाण हुयो है।

व्याख्याः– कवि कैवै कै करमां बाई इण राजस्थानी बोली में ई भगवान सूं 'थाळी भरके ल्याई खीचड़ो, ऊपर घी की बाटकी, जीमो म्हारा स्याम–धणी, जिमावै बेटी जाट की' कैवती खीचड़लो खावण री अरज कीनी अर भगवान घणै हेत सूं खीचड़लो खायो हो। मायड़ भाषा राजस्थानी रो मिठास तो देखो इण भाषा में सांचै मन सूं करी थकी अरज सूं भगवान भी खीचड़ो खा लीनो हो। मेड़तणी मीरा बाई भी गिरधर गोपाळ नैं इण भाषा में ई रिझायो हो। मीरा बाई किरसण जी री दीवानी ही अर वां नैं समरपित आपरा सगळा गीत राजस्थानी में ई गाया हा। कोई नायिका रै रूठणै री अवस्था या भाव नैं मांन करणो कैयो जावै अर इतिहास प्रसिद्ध राणी ऊमादे आपरै पति सूं इण भाषा में ई मांन करियो हो। चित्तौड़ रै दुर्ग में दुसमणां सूं आपरी लाज बचावण सारू जिकी पदमणियां जौहर कीनो अर बलिदान हुयी, वां इण भासा में ई बलिदान री सीख पाई ही। इण भासा में वीरता अर भगती री अैड़ी–अैड़ी बातां है जो खुद नैं देस सारू निछावर कर देवणै री प्रेरणा देवै। आ ही बात ही कै हाडी राणी री वीरता रा बोल आपरै पति चूंडावत राजा नैं जुद्ध में जावण सारू उत्साहित कर दीनो। जद चूंडावत राजा राणी सूं निसाणी मंगवाई तो राणी हाडी आपरो सीस काट दे दीनो। मुरधर माथै संकट आयो तो इणरी बागडोर दुरगादास सरीखा वीरां संभाळी ही अर इण धरा माथै कदे आंच नीं आवण दी। महाराणा प्रताप रो प्रण भी इण भाषा में गूंजियो हो। महाराणा री अबखी वेळा में सहाय करवा सारू भामासाह सिरखा दानी लोग भी हुया जिकां आपरी सगळी जायदाद, धन–दौलत राणा नैं भेंट कर दीधी। इण भांत मातभोम रै भलै वास्तै काम करण वाळा घणै सारा सतवादी सपूतां री आ मायड़ भाषा राजस्थानी है अर इण भाषा री सांतरी सीखां रै कारण ई अठै रा लोग बलिदानी हुया है। आपरो तन–मन–धन इण माटी सारू निछावर करता रैया है।

विसेसः–

(1) राजस्थानी भाषा री वीर–परम्परा रो सांतरो बखाण हुयो है।

(2) राजस्थानी भाषा री प्राचीन काव्य शैली डिंगल में रचीजी आ कविता ओज गुण सूं भरीपूरी है अर इणमें इतिहास प्रसिद्ध कई चरित्रां रो जिक्र आयो है।

(3) राजस्थान धरा सारू अपणायत रा भाव जगावती आ कविता राजस्थान री महिमा रा कई दूजा छंद भी चेतै करावै। संकरदान सामौर कैयो है–

पाणी रो कांई पियै, आ रगत पियोड़ी रज्ज।
संकै मन में आ समझ, घण न बरसै गज्ज।।

———————————————

इणमें ही गायौ हालरियौ, इणमें चंडी री चिरजावां।
इणमें ऊजमणै गीत गाळ, गुण हरजस परभात्यां गावां।
इणमें ही आडी औखांणा, ओळगां भिणत वातां इणमें।
जूनौ इतिहास जौवणौ व्है, तौ अणगिणती ख्यातां इणमें।
इणमें ही ईसरदास अलू, भगती रा दीप संजोया है।
कवि दुरसै बांकीदास करन, सूरजमल मोती पोया है।
इणमें ही पीथल रचि वेलि, रचियोड़ा केइक रासा है।
डिंगळ गीतां री डकरेलण, आ राजस्थानी भाषा है।।

प्रसंगः– 'आ राजस्थानी भाषा है' कविता री आं ओळ्यां में कवि शक्तिदान कविया राजस्थानी भाषा री महिमा रो बखाण करै। कवि बतावै कै राजस्थानी भाषा में साहित्य अर खासकर लोक–साहित्य मोकळायत में मिलै। ओ सगळो साहित्य आखी दुनिया में आपरी ठावी ठोड़ राखै।

व्याख्याः– राजस्थानी लोक–साहित्य रो बखाण आं ओळ्यां में है। टाबर नैं जिकी लोरियां सुणाई जावै, वां नैं हालरिया कैयो जावै। इण भाषा में ई हालरियो गायो जावै अर इण गीत री तागत देखो कै गीत सुणतां–सुणतां ई टाबर सोय जावै। देवियां री आरतियां अर वां री बिड़द में गाया जावण वाळा भजन 'चिरजा' कहीजै अर इण भाषा में चंडी री चिरजावां मोकळी है। इण भासा में ई मोकळा गीत अर गाळ उमंग सूं गाया जावै। देवी–देवतावां, राजा–महाराजावां अर महापुरखां रा गुणां रा बखाण करण वाळा गीतां री अठै कमी नहीं है। इण भाषा में भगवान रो जस बखाण करण वाळा मोकळा 'हरजस' है। प्रभात वेळा गाया जावण वाळा गीत जिणनैं परभात्यां कैयो जावै, वै भी खूब है। इण राजस्थानी भाषा में पहेलियां मोकळी है, जिणनैं आडी कैयी जावै। औखांणा मतलब कहावतां री कोई कमी नीं। किणी री याद अर स्तुति में गाया जावण वाळा गीत 'ओळगां' री भी मोकळायत है। खेतां में गाया जावण वाळा गीत जिकां नैं 'भिणत' कैया जावै, वै भी इण भाषा में घणा है। इण धरती रो जूनो इतिहास जोवणो होवै तो अठै अणगिणत ख्यातां लिखीज्योड़ी है। वां में सूं 'बांकीदास री ख्यात' अर 'नैणसी री ख्यात' आद घणी चावी है। इण भाषा में ई ईसरदास बारठ अर अलूजी कविया आद कवियां भगती रा दीप संजोया हा, जिका आज भी लोगां नैं भगती रो उजाळो देवै है। कवि दुरसा आढा, बांकीदास आसिया, करणीदान अर सूरजमल मीसण सरीखा कवियां आपरी कवितावां में सबदां रा मोती–सा पिरोया है। इणी भाषा में ईज पृथ्वीराज राठौड़ कवि होया जो अकबर रै नव–रतनां मांय सूं अेक होवता थकां ई महाराणा प्रताप रो जस बखाण्या करता। वां पृथ्वीराज राठौड़ ई 'वेलि क्रिसण–रुकमणी री' नांव रो ग्रंथ रच्यो। इण राजस्थानी भाषा में चंदवरदायी रो 'पृथ्वीराज रासो', नरपति नाल्ह रो 'बीसलदेव रासो' सरीखा कई रासो ग्रंथ पण रचीज्योड़ा है। राजस्थानी री प्राचीन अर मध्यकालीन काव्यशैली रो अेक नांव डिंगल है। आ राजस्थानी कविता री शास्त्रीय शैली है। इण शैली में जोसीला अर वीर रस सूं सराबोर मोकळा गीत है। आ भाषा डिंगल गीतां री डकरेलण मतलब ओजस्वी वाणी में बोलीजण वाळा डिंगल गीतां री भाषा राजस्थानी है।

विसेसः–

(1) डिंगल शैली अर ओजस्वी वाणी में राजस्थानी भाषा री साहित्यिक खासियतां रो बखाण हुयो है।

(2) 'कवि दुरसै बांकीदास करन' अर 'डिंगलगीतां री डकरेलण' में वयणसगाई अलंकार है।

———————————————————

इणमें ही हेड़ाऊ जलाल, नांगोदर लाखौ गाईजै।
सौढो खींवरौ उगेरै जद, चंवरी में धण परणाईजै।
काछी करियौ नै तौडड़ली, राईको रिड़मल रागां में।
हंजलौ मौरूड़ौ हाडौ नै, सूवटियौ हरियै बागां में।
इणमें ही जसमां औडण नै, मूमल रूप सरावै है।
कुरजां पणिहारी काछवियौ, बरसाळौ रस बरसावै है।
गावै इणमें ही गोरबंद, मनहरणा बारैमासा है।
रागां रीझाळू रंगभीनी, आ राजस्थानी भाषा है।।

प्रसंगः— डॉ. शक्तिदान कविया री चावी—ठावी कविता 'आ राजस्थानी भाषा है' सूं अवतरित आं ओळ्यां में मायड़ भाषा रो महत्त्व बतायो गयो है। कवि बतावै कै राजस्थानी में मोकळा लोकगीत है अर वां री वजह सूं आ भाषा हरेक इंसान रै हिवड़ै बसियोड़ी है।

व्याख्याः— हेड़ाऊ, जलाल, नांगोदर अर लाखो लोकगीत इण भाषा में गाया जावै। चंवरी में जद धण परणाइजै उण वगत 'सोढौ खींवरो' लोकगीत उगेर्‌यो जावै। ओ गीत फेरां रै वगत गायो जावै। इणरै अलावा इण भाषा रा गीतां में काछी, करियो, तोडड़ली अर रिड़मल राइको लोकगीत भांत—भांत री रागां में गाया जावै। हंजलो, मोरूड़ो, हाडौ अर सूवटियौ लोकगीत हर्‌या—भर्‌या बागां में गाया जावै। राजस्थानी भाषा रै लोकगीतां में ई जसमा ओडण अर मूमल रो रूप सरायो जावै है। आं दोनूं ई नायिकावां माथै राजस्थानी में लोकगीत बहोत ई चावा हुया है। इणरै अलावा कुरजां, पणिहारी, काछबियौ, बरसाळौ लोकगीत रस बरसावै है। इणी भाषा में 'लड़ली लूमां—झूमां' वाळो गोरबंद गीत गायो जावै अर इणी भाषा में ई मन नैं हर लेवण वाळा बारैमासा गाया जावै। बारैमासा मांय न्यारा—न्यारा महीनां मांय विरहणी री मनोदसा रो वरणाव होवै। सगळां नैं आपरी रागां सूं रीझावण वाळी, रंग सूं भरियोड़ी आ राजस्थानी भाषा है।

विसेसः—

(1) कविता री आं ओळ्यां में राजस्थानी भाषा री रागात्मक खिमता रो सांतरो वरणाव हुयो है। इणसूं ओ ठाह लागै कै राजस्थान भलांई खेती री निपज रै मामलै में कम उर्वर प्रदेस है, पण लोकगीतां रै मामलै में ओ प्रदेस घणो उर्वर है।

(2) राजस्थानी री डिंगल शैली में सहज—सरस भाषा रो सांतरो वरताव हुयो है।

(3) 'कुरजां पणिहारी काछबियौ', 'गावै इणमें ही गोरबंद' अर 'रागां रीझाळू रंगभीनी' में वयण सगाई अलंकार है।

———————————————————————————

इणमें ही सपना आया है, इणमें ही औळूं आई है।
इणमें ही आयल अरणी नै, झेडर बाळौचण गाई है।
इणमें ही धूंसौं बाज्यौ है, रण–तोरण वन्दण रीत हुई।
इणमें ही वाघै–भारमली, ढोलै–मरवण री प्रीत हुई।
इणमें ही बाजै बायरियौ, इणमें ही काग करूकै है।
इणमें ही हिचकी आवै है, इणमें ही आंख फरूकै है।
इणमें ही जीवण–मरण जोय, अन्तस रा आसा–वासा है।
मोत्यां सूं मूंगी घणमीठी, आ राजस्थानी भाषा है।।

प्रसंगः– अै ओळ्यां 'आ राजस्थानी भाषा है' कविता सूं ली गई है। इणरा कवि डॉ. शक्तिदान कविया है। इण कविता रै माध्यम सूं राजस्थानी भाषा, साहित, इतिहास अर संस्कृति री गौरव–गमेजपूरण परम्परा रा हेताळु–कवि भांत–भांत रा उदाहरणां अर दृष्टांतां सूं ईं सांच रो बखाण कर्‌यो है कै राजस्थानी भाषा में अणगिणत गुण है। इण भाषा रै कारण ई अठै री धरती माथै वीरता, भगती अर सिणगार री घटणावां नैं यादगार घटणां वणनै रो सुअवसर मिल्यो। प्रस्तुत ओळ्यां में लोक–व्यवहार में राजस्थानी रै वरताव अर उणरी लोकप्रियता रो बखाण करीज्यो है।

व्याख्याः– कवि कैवै कै सुख–दुःख रा सगळा भावां में मायड़ भाषा ही सहायक बणै। मिनख नैं सपना भी आपरी ई भाषा में आया करै। राजस्थानी लोगां नैं सपना इण राजस्थानी भाषा में आया है अर इणी भाषा में किणी री ओळू, किणी री याद आई है। इण भाषा में ई भांति–भांति री लोकगाथावां अर लोकगीत प्रचलित है। आयल, अरणी, झेडर अर बाळोचण लोकगीत अर लोकगाथावां राजस्थानी भाषा में ई गायी जावै है। जुद्ध री वेळा इणी भाषा में नगाड़ो बाजै अर रण–सिधावण री वेळा वीरां रो वंदण भी इणी राजस्थानी भाषा में हुवै। वाघै–भारमली अर ढोलै–मरवण री प्रेम–कथावां इण भाषा में बड़ै चाव सूं गाई जावै। कवि कैवै कै वां प्रेमियां री प्रीत पण इणी भाषा में हुई।

आ धरती सुगन–सरोधां री धरती मानी जावै। मिनख तो मिनख, पंखेरू अर वायरै री भाषा पण राजस्थानी है। इण धरती माथै जो वायरो वाजै, मतलब हवा चालै, उणरी भाषा भी राजस्थानी हुवै है। पांवणां आवण रो सुगन देवण वाळा काग भी इण भाषा में करूकता सुणाई देवै है। जद ई तो मंडेरी माथै काग नैं उडावती वेळा उणरी सोनै सूं चूंच मंढावण री बात करीजै। कैयो जावै कै कोई याद करै तो हिचकी आया करै। कवि कैवै कै म्हारी हिचकी री अर आंख फरूकण री भाषा भी राजस्थानी है। इणी भाषा में म्हारो जीवण अर इणी भाषा में मरण है। यानी आ म्हारै जीवण–मरण री भाषा है, आ म्हारै हरेक काम री भाषा है। इणी भाषा में ई हिवड़ै री आस अर विस्वास है। आ राजस्थानी भाषा मोत्यां सूं मूंघी अर घणी मीठी है।

विसेसः–

(1) राजस्थानी भाषा री महत्ता रै बखाण री इण कविता में कवि राजस्थान री संस्कृति अर इतिहास नैं जीवन्त राखणवाळी राजस्थानी भाषा रा बहुआयामी गुणां रो सरस, असरदार अर चित्रात्मकता रै साथै वरणाव कर्‌यो है।

(2) 'आयल अरणी', अर 'काग करूकै' में अनुप्रास अलंकार है।

(3) डिंगल शैली में सरस–सहज राजस्थानी भाषा रो सांतरो वरताव है।

लेखरूपा पड़ूत्तर वाळा सवाल

1. शक्तिदान कविया री काव्यकला री विवेचना कला अर भाव पख री दीठ सूं करो।

पड़ूत्तरः– डॉ. शक्तिदान कविया राजस्थानी भाषा, साहित अर सस्कृति रा बहुभाषाविद् विद्वान अर डिंगल रा ख्यातनाम कवि हैं। आं री लिखी रचनावां मांय 'संस्कृति री सौरम', 'सपूतां री धरती', 'लाखीणी', 'सोढायण', 'रंगभीनी', 'काव्य–कुसुम', 'कविमत मंडण', 'फूल सारू पांखड़ी', 'दरजी मयाराम री वात', 'राजिया रा सोरठा', 'ऊमरदान ग्रंथावली', 'डिंगल का ऐतिहासिक प्रबंधकाव्य' अर 'राजस्थानी दूहा संग्रह' रो सम्पादन, 'अेलीजी' रो अनुवाद अर 'धरती घणी रूपाळी' रो अनुवाद राजस्थानी साहित भंडार रा अमोल रतन है। राष्ट्रीय स्तर रा पुरस्कारां अर सनमानां सूं सनमानित डॉ. कविया इटली में भी, पत्र–वाचन कर राजस्थानी सस्कृति, इतिहास अर साहित रै प्रचार–प्रसार री उल्लेखजोग सेवा करी। डिंगल–परम्परा रा आधुनिक सशक्त रचनाकारां में डॉ. शक्तिदान कविया रो नांव सबसूं पैली आवै।

भाव–पखः– पाठ्यपोथी में संकलित 'आ राजस्थानी भाषा है' कविता रै माध्यम सूं राजस्थानी भाषा, साहित, इतिहास अर संस्कृति री गौरव–गुमेजपूरण परम्परा रा हेताळु कवि भांत–भांत रा उदाहरणां अर दृष्टांतां सूं ईं सांच रो बखाण कर्‌यो है कै राजस्थानी भाषा में अणगिणत गुण है। इण भाषा रै कारण ई अठै री धरती माथै वीरता, भगती अर सिणगार री घटणावां नैं यादगार घटणा बणनै रो सुअवसर मिल्यो।

इणरो इतिहास अनूठौ है, इण मांय मुलक री आसा है।
चहुकूंटां चावी नै ठावी, आ राजस्थानी भाषा है।।

राजस्थानी भाषा री महत्ता रै बखाण री इण कविता में कवि राजस्थान री संस्कृति अर इतिहास नैं जीवन्त राखणवाली राजस्थानी भाषा रा बहुआयामी गुणां रो सरस, असरदार अर चित्रात्मकता रै साथै वरणाव कर्‌यो है। वीर रस अर ओज गुण वाळी आ रचना राजस्थानी भाषा रो घणो मान बढावै।

कला–पखः– राजस्थानी कविता री शास्त्रीय शैली है डिंगल अर इणी डिंगल शैली में आ कविता रची गई है। डॉ. कविया डिंगल परम्परा रा आधुनिक रचनाकार हैं। इण कविता री भाषा सहज, सरल, सरस अर चित्रात्मक है। अेक–अेक सबद राजस्थानी इतिहास अर संस्कृति रो सजीव चित्र पेस करै। जियां–

करमां री इण बोली में ही, भगवान खीचड़ौ खायौ है।
मीरां मेड़तणी इण में ही, गिरधर गोपाळ रिझायौ है।

आ रचना डिंगल गीत परम्परा री है अर इणमें गयात्मकता अर गत्यात्मकता है। डिंगल शैली री कवितावां री भांत इणरो वाचन राजस्थानी आंदोलन रै मंचां माथै अवस हुवै जो सगळा सुणनियां नैं उछाह सूं भर देवै। वयण सगाई, रूपक अर अनुप्रास आद अलंकारां रै बरताव सूं कविता में कलात्मकता अर चमत्कार देखणजोग है। वयण सगाई अलंकार रा उदाहरण–

'कुरजां पणिहारी काछवियौ'
'गावै इणमें ही गोरबंद'
'डिंगळ गीतां री डकरेलण'

इण विवेचन सूं सिद्ध हुवै कै डॉ. शक्तिदान कविया री काव्यकला हर दीठ सूं सांतरी है अर वै राजस्थानी साहित्य नैं जगचावो करणवाळा समरथ कवि है। आपरी काव्यकला री बदौलत ई बरस 2013 में राजस्थानी भाषा, साहित्य एवं संस्कृति अकादमी, बीकानेर कानी सूं आपनैं सर्वोच्च पृथ्वीराज राठौड़ पुरस्कार दियो जावणो घोषित हुयो।

2. 'आ राजस्थानी भाषा है' कविता मांय इण धरती रा कुण–कुण सा इतिहास पुरूषां रो बखाण होयो है?

पडूत्तरः– डॉ. शक्तिदान कविया 'आ राजस्थानी भाषा है' कविता रै माध्यम सूं राजस्थानी भाषा, साहित, इतिहास अर संस्कृति री गौरव–गुमेजपूरण परम्परा रो बखाण कर्‌यो है। भांत–भांत रा उदाहरणां अर दृष्टांतां सूं वां ईं सांच रो बखाण कर्‌यो है कै राजस्थानी भाषा में अणगिणत गुण है। इण भाषा रै कारण ई अठै री धरती माथै वीरता, भगती अर सिणगार री घटणावां नैं यादगार घटणा बणनै रो सुअवसर मिल्यो।

इणी संदर्भ मांय राजस्थान रा मोकळा इतिहास पुरूषां रो बखाण इण कविता में होयो है। वां इतिहास पुरूषां रो विगतवार बखाण इण भांत है–

संत–पुरख अर लोकदेवता– कविता मांय विस्नोई संप्रदाय रा संस्थापक, 'सिर साटै रूंख रहै, तो भी सस्तो जाण' अर जीव दया रो संदेश देवणवाळा संत जांभोजी, भगत पीपा, वचन पालक पाबूजी राठौड़, समदरसी भावां रो संदेस देवणिया अजमल घर अवतारी श्री रामदेवजी, संत दादू दयाल अर वीर तेजो जी रो सरस अर असरदार वरणन हुयो है। अेक बानगी देखो–

इणमें वीरां री गुणगाथा, इणमें संतां री बाणी है।
इणमें पाबू रा परवाड़ा, इणमें रजवट रो पांणी है।

लोकदेवियां अर बीजी नारियां– इण कविता में राजस्थान री लोकदेवियां आवड़, करणी, मालणदे आद लोकदेवियां रै साथै भगत कवयित्री मीरां बाई, कृष्ण भगत करमां बाई, रूठी राणी रै रूप में जगचावी राणी ऊमादे, आपरी आबरू री रक्षा सारू जौहर करणवाळी पदमणियां, देस री रुखाळी सारू जावतै पति चूंडावत राजा नैं सीस काट अरपित करण वाळी हाडी राणी, लोककथावां में चावी नारियां जसमा ओडण अर मूमल आद रो सांतरो बखाण हुयो है। अेक बानगी देखो–

करमां री इण बोली में ही, भगवान खीचड़ौ खायौ है।
मीरां मेड़तणी इण में ही, गिरधर गोपाळ रिझायौ है।

इतिहास पुरख– राजस्थान रै इतिहास नैं अमर ऊजळो राखण वाळा वीरां रो भी इण कविता में सांतरो बखाण हुयो है। इतिहास प्रसिद्ध हठी हमीर, अबखी वेळा में मुरधर री बागडोर संभाळन वाळा वीरवर दुरगादास, आन–बान रा रूखाळा अर हिंदुस्तानी सूरज महाराणा प्रताप अर मातभोम मेवाड़ धरा सारू आपरी सगळी धन–दौलत अर जायदाद समरपित करण वाळा भामासाह सिरखा दानी वीरां रो सांतरो बखाण इण कविता में हुयो है। अेक बानगी देखो–

इणमें प्रताप रौ प्रण गूंज्यौ, जद भेंट करी भामासा है।
सतवादी घणा सपूतां री, आ राजस्थानी भाषा है।।

कविवर– इण कविता में 'हरिरस', 'देवियांण' अर 'हालां झालां रा कुंडळिया' रा सिरजक ईसरदास बारठ, मध्यकालीन भगत कवियां में चावा अल्लूजी कविया, 'विरुद छिहतरी' अर 'किरतार बावनी' रा सिरजक दुरसा आढा, डिंगल गीतां अर ख्यात रा सिरजक कविराजा बांकीदास, कवि करणीदान, 'वंश भास्कर' अर 'वीर सतसई' जैड़ा ग्रंथां रा सिरजक सूरजमल मीसण अर 'वेलि क्रिसण रुकमणी री' रा सिरजक, महाराणा प्रताप रा प्रसंसक, अकबर रा दरबारी कवि अर पीथल रै नांव सूं चावा कवि पृथ्वीराज राठौड़ रो सरस अर असरदार भाषा में बखाण हुयो है। अेक बानगी देखो–

इणमें ही पीथल रचि वेलि, रचियोड़ा केइक रासा है।
डिंगळ गीतां री डकरेलण, आ राजस्थानी भाषा है।।

राजस्थानी भाषा री महत्ता रै बखाण रै मिस कवि अठै राजस्थान रा इतिहास पुरख, संत–सूरमां अर साहितकारां रो जबरो बखाण कीनो है।

———————————————————